संपादकीय

प्रिय पाठकों हम इस बार के अंक के संपादकीय की शुरुआत श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस कथन से करते हैं, ''समस्या यह नहीं है कि किस प्रकार असमानताओं को दूर किया जाए, परंतु यह कि किस प्रकार असमानताओं के रहते हुए एकता स्थापित की जाए।'' यह कथन हमें समस्याओं को चुनौती की तरह स्वीकार करने को कहता है। इन्हीं असमानताओं को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा पिछले 52 वर्षों से किया जा रहा है। इस कड़ी में एक और प्रयास था- एन.सी.ई.आर.टी. के 53वें स्थापना दिवस की थीम ''शिक्षा में सभी का समावेश।''

हमारा देश विविधताओं और असमानताओं के बावजूद अपने लोकतांत्रिक मूल्यों एवं आदर्शों के कारण दुनिया में एक मिसाल है, जिसमें शिक्षा की अहम भूमिका है, जो देश की विविधता का संरक्षण तथा सँवारने का काम कर रही है। फिर भी हमें विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत कक्षा में सभी बच्चों के लिए समावेशी माहौल तैयार करना है। विशेषकर उनके लिए जिनके लिए हाशिए पर धकेले जाने का खतरा हो। उदाहरण के लिए, वे विद्यार्थी जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ हैं। इन बच्चों के भी अन्य बच्चों के समान अधिकार होते हैं। विद्यार्थियों के बीच मतभेदों को समस्या के रूप में न देखकर शिक्षण के सहयोगी संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए। शिक्षा में समावेश समाज में समावेश का ही एक घटक है। अतः हमें दृढ़ इच्छा शक्ति से काम करना है, व्यवस्थाएँ अपने आप सुधरती जाएँगी। इसकी शुरुआत करना है-स्वयं से, कारवाँ अपने आप बनता जाएगा।

इसी दृष्टिकोण को परिलक्षित करता हुआ लेख ''सामाजिक द्वंद्व एवं शांति शिक्षा'' इस अंक में शामिल है, जिसमें अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों में विषय ज्ञान के अलावा उन्हें अपने आप से परिचित करवाने की बात कही गई है। विद्यार्थियों में सत्य, विश्वास आदि मूल्य रोपित करने होंगे, यही समाज की आवश्यकता है। इसमें मुख्य भूमिका अध्यापक की हो सकती है जो शांति द्वारा विद्यार्थियों में आत्मानुभूति एवं आत्माभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में योगदान देंगे तभी विद्यार्थी सामाजिक विसंगतियों से उभरने वाली समस्याओं को पहचान कर उनका समाधान कर सकेंगे। इसके साथ स्रोत के रूप में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005* से ''शांति के लिए शिक्षा'' भी दिया गया है।

किशोरावस्था में किशोरों में शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इसलिए इस अवस्था को मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था कहा जाता है। किशोरावस्था के बारे में सही जानकारी होना न केवल किशोरों के खुद के लिए आवश्यक है बल्कि माता-पिता/अभिभावक व अध्यापक के

लिए भी बेहद आवश्यक है। हमें यह भी जानने की ज़रूरत है कि हम अध्यापक व अभिभावक किशोरों को एक जिम्मेदार नागरिक बनने में तभी मदद कर सकते हैं जब हम स्वयं जागरूक हों और इस अवस्था के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हों। इसी बात को विस्तृत रूप से लेख ''जानें किशोर मन'' में दिया गया है।

''नयी सदी की चुनौतियाँ और अध्यापक शिक्षा'' तथा ''विद्यालयी हिंसा बनाम शिक्षक नैतिक मूल्य: मुद्दे एवं चुनौतियाँ (भारतीय संदर्भ में)''- इन दो लेखों में अध्यापक शिक्षा को राष्ट्र के उत्पादन तंत्र की महत्वपूर्ण मध्यवर्ती शैक्षिक सेवा बताते हुए सभी उत्पादनों के लिए मानव पूँजी तैयार करने वाले राष्ट्र-निर्माता अर्थात् अध्यापकों को गढ़ने वाले महत्वपूर्ण प्रकल्प के रूप में देखा गया है। अध्यापकों के मूल्यगत ह्रास के कारण विद्यालयी परिवेश में हिंसात्मक गतिविधियों में होती जा रही वृद्धि की रोकथाम के उपायों पर चर्चा भी की गई है। उचित समय प्रबंधन के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु सुझावों पर चर्चा ''समय प्रबंधन से बदल सकता है स्कूलों का परिदृश्य'' लेख में की गई है। भूगोल शिक्षा का ध्येय विद्यार्थियों में मात्र सूचनाओं का एकत्रीकरण करना नहीं, अपितु इस प्राप्त भौगोलिक ज्ञान का उपयोग वास्तविक जीवन में बुद्धिमत्तापूर्वक नयी परिस्थितियों में कैसे कर सकते हैं, यही हमारी भौगोलिक कुशलता का परिचायक है। इसे ''विद्यालयों में भूगोल की शिक्षा के बदलते आयाम'' नामक लेख में व्यापक रूप से दिया गया है।

वहीं शोध पर आधारित शोध-पत्रों में ''नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालय पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन''; ''सायनेटिक्स प्रतिमान के द्वारा सृजनात्मकता का विकास; 'सामाजिक और राजनीतिक जीवन' शिक्षण में अधिगमकर्ता के सामाजिक ज्ञान कोश की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' तथा ''जनसंख्या शिक्षा पर विकसित अनुदेशन सामग्री: प्रभाविता एवं प्रतिक्रियाएँ'' दिए गए हैं।

भारत पर राजनीतिक नियंत्रण कायम कर लेने के बाद ब्रिटिश सरकार ने यहाँ की सामाजिक व्यवस्था एवं शिक्षा प्रणाली का सविस्तार अध्ययन एवं आकलन कई आयोगों एवं समितियों द्वारा करवाया उनमें से एक आयोग की रिपोर्ट पर आधारित लेख ''अंग्रेज़ी राज से पहले पंजाब में शिक्षा'' में ब्रिटिश पूर्व भारत की शिक्षा प्रणाली और उसकी विशेषताओं की एक झलक मिलती है।

आप सब की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। इस बार भी इस अपेक्षा के साथ कि आप लिखें कि यह अंक आपको केसा लगा।

अकादमिक संपादकीय समिति